हम अपने से प्यार करते हैं या मोह?

An Analysis

लक्षण – Symptoms

	यदि अपने से मोह करते हैं	यदि अपने से प्यार करते हैं
1	यदि अपने से हम मोह करते हैं तो अपने को Body मान कर जिएंगे।	यदि अपने से प्यार करते हैं तो "हम एक आत्मा हैं इस Body में", यह ध्यान रखते हुए जिएंगे।
2	यदि हम अपने से मोह करते हैं तो Body की देखभाल में ज्यादा ध्यान लगाएंगे, जो ultimately perish हो जाने वाली है।	यदि हम अपने से प्यार करते हैं तो ज्यादा ध्यान, **मन की सेहत पर लगाएंगे**, Then Body तो अपने आप ही Healthy रहने लगेगी। Death Body की होती है– **मन को आत्मा के साथ अगली (अग्नि) परीक्षा देनी होती है।**
3	यदि हम अपने से मोह करते हैं, तब लोभ के चक्कर में ज्यादा फंसते जाएंगे और Fear (संसारी डर) में जिएंगे। जैसे Accidents- Diseases - Losses, Death का डर	यदि हम अपने से प्यार करते हैं तो प्रभु से डरेंगे। मन से strong होंगे, soul pure रहेगा, Then Body को Accidents, Losses, diseases का कम से कम खतरा होगा।
4	यदि हम अपने से मोह करते हैं तो भरपूर व सार्थक जीवन न जी पाने के कारण, मृत्यु के समय पश्चाताप बहुत होगा। और मरने से डरेंगे क्योंकि अपने को Body जो मान बैठे हैं।	यदि हम अपने से प्यार करते हैं तो **पल पल Full होश और जोश में जीवन जिएंगे।** Therefore, देह के **अन्त में पश्चाताप नहीं, प्रबल प्रताप होगा –** मजबूत मन + पवित्र आत्मा का।
5	यदि हम अपने से मोह करते हैं तब अहंकार (Ego) के कारण– गुस्सा आएगा जिससे– Blood Pressure और Hormonal Disbalance होना ही है। अपनी Body पर स्वयं ही अत्याचार।	यदि हम अपने से प्यार करते हैं तब, गुस्सा, स्वतः ही नहीं आएगा और बीमारियां कोसों दूर रहेंगी।

अब हमें क्या करना है? अपने से मोह या प्यार?

Living Simply & Sensibly

सरल–सादा जीवन
WHY & HOW ?

In facts थोड़ा सा ध्यान से सोचें तो पाएँगे कि Life है तो बहुत simple, हमने अपने Ego (FRACTURED CONCEPTIONS) के कारण इसे un-neccesarily complicated बना लिया है।

For example, अहंकार (मैं–पन), मेरी superiority सिद्ध हो, इसलिए सच को छुपाने की कोशिश में लगे रहते हैं। इससे fresh Life Energy का body में free flow नहीं होता है, और बीमार सोच से शरीर को बीमार कर लेते हैं।

दूसरे हमारे बारे में क्या सोचते हैं, इस पर ज्यादा concentration दी जा रही है, जब कि हम अपना emotional and spiritual development कैसे करें, इस पर Time and Energy focus करनी थी। for example, Hair Colouring इसलिए करने का मन करता है, ताकि हम स्वयं भी और दूसरे भी हमें young **समझते रहें**। हम दूसरों की appreciation के मोहताज क्यों बनते रहें?

young रहना ज्यादा Important है या young दिखना?

Nature ने बाल सफेद किए, तो कुछ सोच समझ कर किए होंगे, हमें कोई Message देना चाह रही होगी प्रकृति। But are we brave enough to face the truth?

Holy Quran में स्पष्ट लिखा है–

ELIMINATE FANCY MASKS

and

FLAVOURED EXCUSES

TELL THE TRUTH GENTLY AND FIRMLY. THIS WAY YOU MAKE OTHERS STRONGER AND HAPPIER, IN THE LONG RUN, GAINING THEIR RESPECT AND TRUST. GITA - BIBLE - GURU GRANTH SAHAB भी यही GUIDE कर रहे हैं– **लेकिन केवल भाग्यशाली ही इस पर चलते हैं और जिन्दगी का सादगी में पूरा मजा लेते हैं?**

चलते हुए, पाँव **हड्डी** पर पड़ गए तो बोल पड़ी **हड्डी**,
जरा ध्यान से चलो, कभी हम भी तुम्हारी तरह इन्सान थे।

Almost सारी दुनिया इस समय, पैसे की दीवानी है।
By hook or by crook, अमीर बनना है।
लेकिन इसके Results क्या होते हैं !
Let us analyse minutely between

लाभ	v/s	शुभ लाभ
धन आना चाहिए कैसे भी आए – **पाप पुण्य की चिन्ता नहीं**		धन आए– किन्तु धर्म से और ईमान से। पुण्य मिले– पाप – तौबा–तौबा, नहीं।
केवल लाभ लेने की चेष्टा में दूसरों को Harm भी कर सकते हैं।		शुभ–लाभ के Aim में किसी दूसरों को Harm कभी नहीं करेंगे।
दूसरों को हानि पहुंचाकर लाभ कमाने में Negative vibration (बद्दुआएं) मिलना निश्चित ही हैं।		बिना किसी को Damage करके शुभ लाभ कमाने में Positive Energy (शुभाशीष) मिलती ही है। मंगल ही मंगल। इन्सान फलता–फूलता है।
लाभ की कमाई में **बरकत** की कोई गारन्टी नहीं होती। **बरकत** के बिना बचत कम, खर्चा ज्यादा हो जाता है।		शुभ लाभ में बरकत की गारन्टी है– It means सीमित pure profit में भी सारे कार्य, और खर्चे, आश्चर्यजनक रूप से पूरे हो जाते हैं।
केवल लाभ कमाने से खुशनसीबी का वातावरण तैयार नहीं हो पाता। **कलेश** व **अशान्ति** की **प्रबल आशंका रहती है।**		शुभ लाभ के इच्छुक खुशनसीब बनते चले जाते हैं– घर परिवार में सुख शान्ति रहती है।
जब दूसरों पर **जबरदस्ती दबाव डालकर लाभ कमाया जाता है** तब, Laws of nature की अवहेलना के कारण, ग्रह दिशा व दशा, विपरीत होने लगती है, तथा **बीमारी व अन्य अप्रत्याशित मदों में खर्च होने लगता है।**		जब दूसरों के सहयोग से शुभ लाभ अर्जित किया जाता है, as per laws of nature, then ग्रह दशा linear line में रहने के कारण सुख रूपी सौभाग्य प्रकट होने लगता है।
लाभ कमाने के चक्कर में जो **बेखौफ** हो जाते हैं **कि अरे सभी कमा रहे हैं**, कौन परवाह करता है, क्या होता है, वे नशे के सेवन के शिकार हो जाते हैं व खर्चे बढ़ने के साथ–2 माता–पिता व वंश तक अमंगल पहुंचने लगता है।		शुभ लाभ (प्रभु के डर के कारण) कमाने वाले विनम्र व प्रेमी स्वभाव के हो जाते हैं तथा नशे आदि से दूर रहते हुए पवित्र तरंगों से माता–पिता व वंश के मंगल का कारण बन जाते हैं।

तभी तो दीवाली की पूजा पर लाभ नहीं 'शुभ लाभ' की प्रार्थना की जाती है।

Published by MISSION HAPPINESS, C-79/2, Rajendra Nagar, Bareilly.
Ph. : 9837032053. email : missionhappiness29@yahoo.com Designed & Printed by : CANNON

IN THE NAME OF GOD

VOL. 32, JUNE 2010

FOR FREE CIRCULATION WITHOUT ANY COMMERCIAL OBJECTIVE

उच्चश्रेणी के जीवन के लिए आवश्यक

अंतरध्वनि

The Inner Voice

Essential for purposeful living

For Awakening the Soul

चार कंधों की Last यात्रा से पहले चार, "जीवन बदल देने" वाले Questions.

सौ रुपये खर्च करने में हम जितनी समझदारी दिखाते हैं,
क्या उतनी ही समझदारी सौ सांसें खर्च करने में दिखाते हैं?

क्या हम past को कोसने और Future को कसने के फेर में
present में कसमसा नहीं रहे हैं?

जानते हुए भी कि जल्दबाजी जहर है,
फिर भी हम Hurry और worry में क्यों फंसे हुए हैं?

'मैं पन' से नुकसान और 'अपने पन' से लाभ, यह तो
Definite होना ही है। फिर भी 'मैं पन' में जीते हुए
अपने को damage क्यों कर रहे हैं?

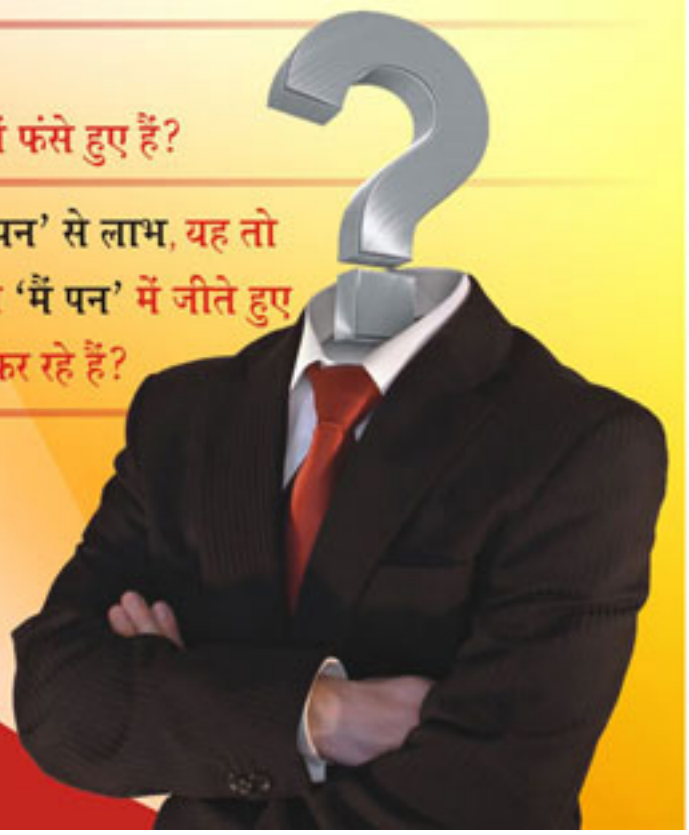

- Science of Living
- Science of Loving
- Science of Leaving

मृत्यु से पहले ही मोक्ष®

Mission Happiness®

Mission Consciousness®